ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 82-84**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

मुण्डा जनजाति में शिक्षा और आधुनिकीकरण
(एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ0 सत्येन्द्र सिंह

पी–एच0डी0, समाजशास्त्र, ग्राम– लालमनचक, पो०– चौंड़, थाना– मखदुमपुर (बिहार) भारत

Received-21.09.2025, Revised-28.09.2025, Accepted-04.10.2025 **E-mail : satyendrasingh99344@gmail.com**

सारांशः शिक्षा वर्तमान शताब्दी की वह सबसे महत्त्वपूर्ण संस्थागत प्रक्रिया (institu tionalized process) है, जो व्यक्ति तथा समाज के जीवन को विविध रूपों में प्रभावित करती है। शिक्षा समाजीकरण की एक प्रक्रिया ही नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक मूल्यों को आगामी पीढ़ियों तक पहुँचाने तथा विभिन्न समस्याओं का सर्वोतम हल ढूंढने का भी यह सबसे अच्छा माध्यम है। शिक्षा ने आज औद्योगिक विकास, आर्थिक संरचना, राजनीतिक जीवन, सामाजिक पुनर्निर्माण और व्यक्तित्व के विकास को एक–दूसरे से इस तरह सम्बद्ध कर दिया है कि कुछ समय पहले इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी । यही कारण है कि आधुनिक समाज में शिक्षा को सामाजिक नियन्त्रण के एक महत्त्वपूर्ण अभिकरण के रूप में देखा जाता है। यह ध्यान रखना चाहिए कि शिक्षा का तात्पर्य केवल पुस्तकीय ज्ञान से ही नहीं है बल्कि समाज में विभिन्न सस्थाएँ अपने संचित अनुभवों के आधार पर जो व्यावहारिक ज्ञान व्यक्ति को प्रदान करती रहती हैं, उसका भी शिक्षा में उतना ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। फिलिप्स का कथन है कि "शिक्षा वह संस्था है, जिसका केन्द्रीय तत्त्व ज्ञान का संग्रह है।"[1] इस दृष्टिकोण से शिक्षा चाहे पुस्तकीय ज्ञान से सम्बद्ध हो, चाहे यह ज्ञान लोकरीतियों और प्रथाओं के रूप में दिया जाता हो अथवा यह परिवार के दैनिक कार्यों के विषय में हो, हम इस सम्पूर्ण ज्ञान को शिक्षा के अन्तर्गत सम्मिलित करते हैं। यह वह ज्ञान है जो हमें अतीत के अनुभव देता है, वर्तमान को समझने की क्षमता प्रदान करता है और भावी परिस्थितियों के विश्लेषण के लिए तर्क–बुद्धि देता है।

कुंजीभूत शब्द– आधुनिकीकरण, समाजीकरण, केन्द्रीय तत्त्व ज्ञान, औद्योगिक विकास, आर्थिक संरचना, सामाजिक पुनर्निर्माण ।

भूमिका : शिक्षा का रूप प्रत्येक युग और प्रत्येक स्थान में समान नहीं रहा है। कुछ समय पहले तक शिक्षा को एक ऐसी संस्था से रूप में देखा जाता था जिसका कार्य व्यक्तियों में नैतिक विश्वारों का विकास करना था। इस प्रकार बहुत लम्बे समय तक शिक्षा को सांस्कृतिक विरासत से मिलाकर इसे धार्मिक पृष्ठभूमि में स्पष्ट किया जाता रहा। भारत में स्मृति काल से लेकर लगभग 19वीं शताब्दी तक शिक्षा इसी रूप में विद्यमान रही। वर्तमान परिस्थितियों ने शिक्षा की संरचना को पूरी तरह से बदल दिया है। आज वैयक्तिक शिक्षा के स्थान पर समूह–शिक्षा (mass education) को प्रोत्साहन मिला है और दूसरी ओर इसे धर्म के दायरे से बाहर लाकर तर्क तथा औद्योगिक विकास से सम्बद्ध कर दिया गया है, लेकिन दोनों दशाओं में इसका उद्देश्य ज्ञान का संग्रह करना ही है।

यदि हम विभिन्न समाजों में शिक्षा की विविधता को देखना चाहें तो स्पष्ट हो जायेगा, कि सरल समाजों में शिक्षा का रूप परम्परागत होता है। यहाँ शिक्षा परिवार के द्वारा दी जाती है। दूसरी ओर हमारे जैसे औद्योगिक समाजों में शिक्षा पूर्णतया विशेषीकृत है। यहाँ शिक्षा आत्मनियन्त्रण को उतना महत्त्व नहीं देती जितना कि प्राकृतिक जगत पर नियन्त्रण करने को। इसके फलस्वरूप बड़े–बड़े विश्वविद्यालयों तथा स्कूलों द्वारा औपचारिक शिक्षा व्यवस्था का विकास हुआ है, जिसको प्राप्त करने के लिए एक लम्बे प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। शिक्षा का यह स्वरूप अपनी प्रकृति से व्यावसायिक है। इस प्रकार बाटोमोर के शब्दों में कहा जा सकता है कि "शिक्षा आवश्यक रूप से नयी पीढ़ियों का समाजीकरण करने का कार्य करती है, लेकिन सामाजिक समूहों और संस्थाओं के अनुसार यह स्वयं विविध स्वरूपों में स्पष्ट होती है।"[2]

शिक्षा व्यक्ति का मानसिक, सामाजिक, चारित्रिक, नैतिक तथा सांस्कृतिक विकास करता है। साथ ही इसके द्वारा भौतिक समृद्धता भी सम्भव हो पाती है। शिक्षा के अभाव में कोई भी परम्परागत समाज आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से नहीं गुजर सकता है। शिक्षा के द्वारा ज्ञान में वृद्धि तथा प्रौद्योगिक खोज को बढ़ावा मिलता है। ज्ञान में विकास आधुनिकीकरण के लिए आवश्यक है। आधुनिकीकरण एक प्रक्रिया है, तो इस प्रक्रिया के विभिन्न चरणों को शिक्षा के प्रसार से प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा एक व्यक्ति अपने समाज तथा अन्य समाजों के विभिन्न निर्णायक तत्वों के बारे में जानकारी प्राप्त करता है। आधुनिक शिक्षा व्यक्तियों को इस योग्य बनाती है, ताकि वे उन संभावनाओं के अनुसार पहले से ही व्यवहार के लिए तैयार रहे जो घटित होने वाली है। अतः यह कह सकते हैं कि शिक्षा लोगों की मनोवृत्तियों में परिवर्तन लाकर उन्हें इस प्रकार के व्यवहार के लिए प्रेरित करती है जो व्यवहार खुले समाज की विशेषता है। अतः मनोवृत्ति में होने वाला यह परिवर्तन आधुनिकीकरण का द्योतक है, जो शिक्षा के द्वारा ही सम्भव हो पाता है।

भारत में अंधविश्वास तथा अतार्किक व्यवहार में जो कमी आई है, उसमें शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार का श्रेय ईसाई मिशनरियों, ब्रिटिश सरकार और प्रगतिशील भारतीयों को जाता है। अंग्रेजी सरकार ने यह तय किया कि भारत में यूरोपीय साहित्य और विज्ञान को प्रोत्साहन दिया जायेगा। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होगा तथा शिक्षा कोष में संचित धन राशि का व्यय अंग्रेजी शिक्षा के लिए होगा। शिक्षा के विकास में लार्ड डलहौजी, लार्ड मैकाले आदि ब्रिटिश अधिकारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। राजाराम मोहन राय आधुनिक शिक्षा के समर्थक थे। ए. आर. देसाई ने अपनी पुस्तक "भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि" में कहा है कि "राजा राम मोहन राय प्रगतिशील आधुनिक शिक्षा के अग्रणी थे। उन्होंने पश्चिम के देशों के वैज्ञानिक और प्रजातांत्रिक विचारों के आगार के रूप में अंग्रेजी शिक्षा का स्वागत किया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में यह कहा कि शिक्षा की प्राचीन पद्धति को जारी रखने का अर्थ है, अंधविश्वास और परम्परागत अधिकार एवं कालजन्य प्रमाणिकता को जारी रखना। अगर ब्रिटिश राष्ट्र को वास्तविक ज्ञान से अनभिज्ञ रहना होता तो मध्यकालीन दार्शनिक तर्क मोह, जो उनकें अज्ञान को बनाए रख सकता था कि जगह बेकन का दर्शनवाद कभी नहीं आता। इसी तरह अंग्रेजी शासन का यह उद्देश्य होता कि भारतीयों को अज्ञान के अंधकार में रखा जाए तो संस्कृत शिक्षा प्रणाली को ही जारी रखा गया होता।"[3]

राजा राम मोहन राय के विचारों का विश्लेषण करते हैं तो हम पाते हैं कि उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त अंधविश्वास को दूर करने के लिए अंग्रेजी शिक्षा का समर्थन किया। वे जानते थे कि वैज्ञानिक और प्रजातांत्रिक मूल्यों का विकास अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव हो सकता है।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

बाद में ब्रह्म समाज, रामकृष्ण मिशन, अलीगढ़ आंदोलन, तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, महात्मा गाँधी इत्यादि के प्रयासों के फलस्वरूप भारत में शिक्षा का प्रसार हुआ। देसाई ने आगे कहा है कि "अंग्रेजी भाषा के अध्ययन से उस भाषा में उपलब्ध सामाजिक समता और प्राकृतिक बुद्धिवादी दर्शन संबंधी साहित्य के अध्ययन–मनन का मौका मिला, जिसने जनतांत्रिक और बुद्धिवादी दृष्टिकोण को प्रश्रय दिया। सामाजिक समता संबंधी दर्शन से व्यक्तिगत और राष्ट्रीय स्वतंत्रता की प्राप्ति सरल हुई। बुद्धिवादी दर्शन की मदद से मन (Mind) गहन अंधविश्वास और हजारो–लाखों देवताओं एवं भाग्यवाद और परलोकवाद की जकड़ से बाहर निकल सका।"[4]

देसाई के विचारों का विश्लेषण करते हैं, तो पाते हैं कि सामाजिक समता, जनतांत्रिक और बुद्धिवादी दृष्टिकोण का विकास अंग्रेजी भाषा के अध्ययन से ही सभंव हो पाया और राष्ट्रीय स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त हो पाया। इस प्रकार आधुनिक शिक्षा के विकास के कारण स्वतंत्रता, समानता, बन्धुत्व तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास भारतीयों में हुआ, जो आधुनिकीकरण को दर्शाता है।

आगे योगेन्द्र सिंह का भी मानना है कि आधुनिक शिक्षा का आधार वैज्ञानिक है, जिसमें स्वतंत्रता, समानता तथा मानवतावाद के तत्व सम्मिलित है। आगे उन्होंने कहा है कि नवीन शिक्षा के कारण भारत में सांस्कृतिक सुधारवादी आन्दोलन का जन्म हुआ। उनके विचार में राजा राम मोहन राय मानवतावादी सामाजिक सुधारक थे, राजा राम मोहन राय ने पश्चिमी समाज के विवेकीकरण के सिद्धान्त तथा भारतीय समाज के बीच मानववादी दृष्टिकोण के बीच एक समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया। वे भारतीय मूल्य और दर्शन में प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण के अनुसार परिवर्तन लाने का प्रयास किए।

सांस्कृतिक जागरण के फलस्वरूप ब्रिटिश सरकार की सहायता से सती प्रथा (1829) का उन्मूलन, विधवा पुनर्विवाह (1856) अधिनियम पारित हुआ। इसके अतिरिक्त अनेकों नियम बनाये गये जैसे उत्तराधिकारी अधिनियम (1865), सम्पत्ति का हस्तांतरण अधिनियम, प्रेस अधिनियम (1878) तथा फैक्ट्री अधिनियम (1881) इत्यादि। देश की आजादी के बाद हिन्दू विवाह अधिनियम (1955), दहेज निरोधक अधिनियम (1961) लागू किया गया। इस प्रकार भारत में समता के सिद्धांत को लाने का प्रयास किया। योगेन्द्र सिंह ने यहाँ तक कहा है कि "Some branches of Modern education such as science] engineering and medicine directly focus on a world view which embodies the core values of modernization and imparts skill to realize the goal of a modern society.[5]

योगेन्द्र सिंह के इस कथन से यह बात स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिक शिक्षा के कुछ भाग जैसे विज्ञान, इंजीनियरिंग तथा चिकित्सा आदि ने उस कुशलता में वृद्धि किया है जो आधुनिक समाज के लक्ष्य प्राप्ति के लिए आवश्यक है।

आगे योगेन्द्र सिंह ने कहा है कि शिक्षा, आधुनिकीकरण में सहायक है अथवा नहीं, उसे तीन दृष्टिकोण से देखना होगा। प्रथम शिक्षा का सांस्कृतिक तत्व, द्वितीय इसका संगठनात्मक ढाँचा और तीसरा शिक्षा में विकास की दर। जहाँ तक शिक्षा के सांस्कृतिक तत्वों का प्रश्न है, वे पूरी तरह से मानववादी, धर्म निरपेक्ष तथा उदारवादी हैं जो आधुनिकीकरण का चिन्ह है। शिक्षा का संगठनात्मक ढाँचा स्कूल, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय है, जिनकी संख्या निरन्तर बढ़ रही है। आज कलिंजों की संख्या लाखों में पहुँच गयी, जो आधुनिकीकरण को दर्शाता है।

उपर्युक्त विभिन्न विवेचनाओं के आधार पर निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि शिक्षा आधुनिकीकरण लाने में अहम भूमिका निभाती है। यही कारण है कि अंग्रेजी शिक्षा के विकास होने के फलस्वरूप ही स्वतंत्रता, समानता, बन्धुत्व, तार्किक मनोवृत्ति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि का विकास हुआ। शिक्षा के विकास के फलस्वरूप विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का भी विकास होता है, जो आधुनिकीकरण का द्योतक है। आज भारतीयों में शिक्षा की दर में लगातार वृद्धि हो रही है, जो आधुनिकीकरण का द्योतक है। अतः यह कह सकते हैं कि भारत आधुनिकीकरण के पथ पर अग्रसर है।

अध्ययन का उद्देश्य– प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य जनजातीय छात्रों पर आधुनिकीकरण के प्रभाव में आधुनिक शिक्षा के योगदान को स्पष्ट करना है।

साहित्य सर्वेक्षण– प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित कुछ अध्ययन भी हुए हैं, जिनमें के०एस० सिंह (1966), माखन झा (1982) के अतिरिक्त ए०आर० देसाई, रजनी कोठारी, योगेन्द्र सिंह, एम०एन० श्रीनिवास तथा एस०सी० दूबे आदि का अध्ययन उल्लेखनीय है।

अध्ययन क्षेत्र– प्रस्तुत अध्ययन के लिए बिहार राज्य के पूर्णिया शहर का चयन किया गया है। पूर्णिया जिला में अनेक जनजातियाँ निवास करती है जिनमें मुण्डा जनजाति भी एक है।

निदर्शन– प्रस्तुत अध्ययन के लिए पूर्णिया शहर के कॉलेजों में पढ़ने वाले 50 जनजातीय छात्रों का चयन सुविधाजनक निदर्शन पद्धति के द्वारा किया गया है। चयनित छात्र इन्टरमीडिएट तथा स्नातक शैक्षिक स्तर के हैं।

शोध प्रविधि– प्रस्तुत अध्ययन में अनुसुची प्रविधि का उपयोग किया गया। अनुसुची के प्रश्नों को चयनित छात्रों से सम्पर्क कर साक्षात्कार लिया गया।

तथ्य संकलन के स्रोत– प्रस्तुत अध्ययन के लिए तथ्यों को संकलन प्राथमिक एवं द्वितियक स्रोतों से किया गया। प्राथमिक तथ्यों का संकलन अनुसुची प्रविधि द्वारा और द्वितियक तथ्यों का संकलन प्रस्तुत विषय से संबंधित रचनाओं से किया गया।

तथ्यों का वर्गीकरण सारणीयन एवं विश्लेषण– प्राथमिक तथ्यों को सारणी के द्वारा वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया गया। तत्पश्चात् अध्ययन के निष्कर्ष पर प्रकाश डाला गया।

प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण– अध्ययन में 18 वर्ष से लेकर 26 वर्ष एवं इससे अधिक आयु के उत्तरदाता सम्मिलित हैं। 18–19 वर्ष के 16 उत्तरदाता, 20–21 वर्ष के 15 उत्तरदाता, 22–23 वर्ष के 12 उत्तरदाता 24–25 वर्ष के 5 उत्तरदाता तथा 26 से ऊपर वर्ष के 2 उत्तरदाता सम्मिलित है।

अध्ययन में 45 उत्तरदाता अविवाहित हैं और 5 उत्तरदाता विवाहित हैं। चयनित उत्तरदाताओं में से 12 उत्तरदाता स्थानीय आवास में रहते हैं तथा 38 उत्तरदाता छात्रावास में निवास करते हैं।

12 उत्तरदाताओं का शैक्षणिक स्तर इन्टरमीडिएट हैं और 38 उत्तरदाताओं का शैक्षणिक योग्यता स्नातक है। 30 उत्तरदाताओं को परिवार एकाकी है और 20 उत्तरदाताओं का परिवार संयुक्त है।

जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न पूछा गया कि शिक्षा के विकास में ईसाई मिशनरियों का योगदान रहा है? 98 प्रतिशत छात्रों ने स्वीकार किया कि शिक्षा के विकास में ईसाई मिशनरियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। शिक्षा के विकास के कारण ही आज जनजातीय छात्राओं में आधुनिकीकरण देखा जा रहा है।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.- IV, Issues-38, YEAR- Oct.-Dec.2025

उत्तरदाताओं से यह प्रश्न पूछा गया कि किया शिक्षा के कारण राजनैतिक चेतना का विकास हुआ है? 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि शिक्षा के कारण उनमें राजनैतिक चेतना का विकास हुआ है जबकि 5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उनमें राजनैतिक चेतना का विकास नहीं हुआ है।

उत्तरदाताओं से यह प्रश्न पूछा गया कि क्या शिक्षा के कारण आपकी मनोवृत्ति में परिवर्तन हुआ है? 98 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि उनके मनोवृत्ति परिवर्तन में शिक्षा की अहम भूमिका रही है। अतः कह सकते हैं कि मनोवृत्ति परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका उल्लेखनीय है, जो आधुनिकीकरण के लक्षण को दर्शाता है।

आगे छात्रों से यह पूछा गया था कि क्या शिक्षा के कारण वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हुआ है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए 92 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास शिक्षा के कारण हुआ है, जबकि 8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नाकारात्मक उत्तर दिया।

उत्तरदाताओं से यह प्रश्न पूछा गया था कि क्या व्यक्तिगत स्वतंत्रता का विकास शिक्षा द्वारा हुआ है? 94 प्रतिशत छात्रों का मानना है कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता का विकास शिक्षा के कारण हुआ है। भारतीय संविधान के प्रस्तावना तथा मौलिक अधिकार में व्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान की गई है, लेकिन व्यवहार में व्यक्ति की स्वतंत्रता, सामाजिक नियम, परम्परा, प्रथा, धर्म आदि से बाधित हो जाती है। फिर भी शिक्षा के विकास के कारण व्यक्तिगत स्वतंत्रता के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है। जैसा कि उपरोक्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है।

छात्रों से यह प्रश्न भी पूछा गया था कि क्या शिक्षा के कारण स्त्रियों को सम्मान मिला है? इस प्रश्न के उत्तर में 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि किसी भी समाज में स्त्रियों की स्थिति या सम्मान उस समाज की सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति को निर्धारित करती है। जनजातीय समाज में स्त्रियों का सम्मान उनके संस्कृति द्वारा निर्धारित होता है। जिसके कारण अलग–अलग जनजातियों में स्त्रियों के सम्मान में भिन्नता आ जाती है। मातृसत्तात्मक समाजों में स्त्रियों को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है, लेकिन मुण्डा जनजातीय समाज पितृसत्तात्मक है। अतः यहाँ भी स्त्रियों को उचित सम्मान नहीं मिल पाया है, लेकिन वर्तमान समय में जनजातीय समाज में स्त्रियों का सम्मान देखने को मिल रहा है। इस तथ्य की पुष्टि ऊपर की तथ्यों से होता है। जिसमें अधिकांश उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि शिक्षा के कारण ही आज स्त्रियों का सम्मान बढ़ा है।

उत्तरदाताओं से एक प्रश्न यह भी पूछा गया था कि क्या आप शिक्षा के लिए सरकार द्वारा प्रदत्त लाभ को उठा पाते हैं या नहीं ? शत–प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि वे छात्रवृत्ति का लाभ उठा रहे हैं तथा 76 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि वे आवासीय सुविधा का लाभ उठा रहे हैं, जिन उत्तरदाता कि पृष्ठभूमि ग्रामीण क्षेत्र से है, वे छात्रावास में रहकर अध्ययन कर रहे हैं।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षा के विकास के कारण स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, विवेकीकरण जैसे मूल्यों का विकास होता है, जिसके फलस्वरूप व्यक्तियों में विश्व वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवतावाद तथा बुद्धिवाद का विकास होता है। साथ ही अनेक सुधारवादी आंदोलनों तथा समाज में व्याप्त, अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन संभव हो पाता है। यह बात जनजातीय छात्रों पर लागु होता है। जैसा कि अध्ययन में पाया गया है कि शिक्षा के विकास में ईसाई मिशनरियों का काफी महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जिसके फलस्वरूप जनजातीय छात्रों में आधुनिकीकरण देखा जा रहा है, क्योंकि शिक्षा के कारण जनजातीय छात्रों में राजनीतिक चेतना का विकास हुआ है, जो उनके मनोवृत्तियों में परिवर्तन का परिचायक है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रति वे उन्मूख हुए हैं। यही कारण है कि आज अधिकांश व्यक्तियों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता का विकास हुआ है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता में होने वाले परिवर्तन आधुनिकीकरण के लक्षण को दर्शाता है। ऐसे तो उनके समाज में लिंग विभेद कम था, फिर भी आज दोनों पक्ष एक दूसरे को अधिक स्वतंत्रता देने के पक्ष में है। यही कारण है कि आज स्त्रियों के सम्मान में वृद्धि हुई है।

जनजातीय छात्रों में जो आधुनिकीकरण की प्रक्रिया देखी जा रही है। इसका सबसे बड़ा कारण सरकार द्वारा अनेक सुविधाएं उपलब्ध कराये जाना है। आज वे छात्रवृत्ति, आवासीय सुविधा तथा अन्य लाभ भी प्राप्त कर रहे हैं। सरकार द्वारा दी गई सुविधाओं के कारण शिक्षा के प्रति उनका रूझान दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. B.S. Philips, Sociology: Social Structure and Change, P. 305.
2. T.B. Bottomore, Sociology, P. 275.
3. देसाई, ए०आर० (2001) : भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, पृष्ठ–114 (पूर्ण संशोधित)।
4. वही, पृष्ठ–130.
5. Singh Yogendra, (1988): Modernization of Indian Tradition, P.102, (Reprint).

*****